ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड – VIII अंक –VI

सितंबर, 2016

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- मोबाइल एप किसान सुविधा
- इस माह के कृषि उद्यमी : श्री. राजकुमार खर्ब, हिसार, हरयाणा
- इस माह का संस्थान : कृषि विज्ञान केंद्र, बाभलेश्वर, महाराष्ट्र
- मीठे पानी के मोती की खेती : उत्तरप्रदेश में एक लाभदायक उद्यम

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

मोबाइल एप किसान सुविधा

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने किसानों और अन्य स्टेकहोल्डरों की सुविधा के लिए किसान सुविधा नामक मोबाइल एप विकसित किया है। यह एप पाँच महत्वपूर्ण मापदण्डों जैसे मौसम, इनपुट विक्रेता, मंडी मूल्य, पौध संरक्षण और कृषि सलाह पर सूचना प्रदान करता है।

यह एप स्थानीय भाषा में अनुवाद की सुविधा के साथ अँग्रेजी और हिन्दी भाषा में लॉन्च किया गया था।

इस में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

- मौसम: चरम मौसम के अलर्ट के साथ वर्तमान दिन और अगले 5 दिनों के लिए मौसम का पूर्वानुमान।
- इनपुट विक्रेता: पंजीकृत किसानों के क्षेत्र में कीटनाशक, उर्वरक, बीज और कृषि मशीनों के विक्रेताओं का संपर्क पता।
- मंडी मूल्य: नजदीकी क्षेत्र में माल का मंडी मूल्य और राज्य और साथ ही भारत में अधिकतम मूल्य।
- पौध संरक्षण: फसलों के कीटों और रोगों के संदर्भ में सूचना सहित सिफ़ारिशें।
- कृषि सलाह: किसानों की स्थानीय भाषा में विशेषज्ञों द्वारा सलाह।
- केसीसी को कॉल करें: एक अतिरिक्त टैब किसानों को सीधा किसान कॉल सेंटर से जोड़ता है जहां तकनीकी स्नातक उनके प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

यह एप इन हाउस विकसित किया गया है और इसे गूगल प्ले स्टोर, एमकिसान (mkisan.gov.in) और मोबाइल सेवा एप स्टोर (apps.mgov.gov.in/index.jsp) से डाउनलोड किया जा सकता है।

जैविक गुड से सफलता का मीठा स्वाद

हिसार, हरयाणा के श्री. राजकुमार खर्ब (60) का कहना है कि, 'गुड' भारत का एक मिट्ठा पदार्थ है, जिसे गन्ने को पीस कर उसके रस को खुले पतीले में उबालकर बनाया जाता है। कृषि विभाग हरयाणा से कृषि विकास अधिकार के पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात, श्री.खर्ब जैविक कृषि में अपना स्वयं का उद्यम आरंभ करना चाहते थे। वर्ष 2015 में उन्होंने इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीबिज़नस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी), कर्नाल, हरयाणा में एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस केंद्र(एसी एवं एबीसी) योजना में 60 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस योजना के तहत प्रवेश लिया। इस प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने बाजार का सर्वेक्षण करना, परियोजना रिपोर्ट तैयार करना और व्यवसाय के विकास के आवश्यक नरम कौशल सीखे। उनका कहना है कि, "क्षेत्रीय दौरों ने अच्छे अवसर दिये जहां प्रतिभागी अपने विचारे गए व्यवसाय में प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर सके, उनके द्वारा सामना की जाने सकने वाली आम समस्याओं और अन्य आकस्मिकताओं का विचारे गए समाधान प्राप्त कर सके।

स्वयं की निधि के निवेश से श्री. खर्ब ने "एआरबी जैविक गुड़" के नाम से फ़र्म पंजीकृत किया और गन्ने के किसानों के साथ कार्य करने लगे। गन्ने में मोनो-क्रोप्पिंग से बचाव और रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अधिक प्रयोग से बचाव का समर्थन करते हुये, वें उत्पादकों से चाहते थे कि वें मिट्टी की अधिक उपज देने की पूर्ण क्षमता को समझे और उस पर सबसे अधिक ध्यान दे और उसे कृषि की स्थिरता बनाये रखे। उन्होंने अपने 20 एकड़ की ज़मीन को पूरी तरह से बदल दिया है, जहां बिलकुल जैविक तरीके से गन्ने की खेती की जाती है। न केवल उन्होंने इसका प्रयोग किया बल्कि उन्होंने दूसरे कृषकों को भी "जीवमृत" – एक पारंपरिक और आसान तरीके से बनाया हुआ जैविक मिश्रण जो भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तरप्रदेश में बनाया गया है के प्रयोग का सुझाव दिया। उन्होंने पाँच गाँव से 50 गन्ना कृषकों को इकट्ठा किया और अब जैविक गुड़ के उत्पादन में शामिल हैं। वें साधारण भारतीय गुड़ बनाने वाले कुटीर-उद्योग को फ़ैक्टरी फ्रैंचाइज़ में बदलने में सक्षम रहें, जबकि साथ ही गन्ने के उत्पादकों को चीनी मिलों के विपरीत समय पर भुगतान कर उनके जीवन स्तर को सुधारने में मदद कर रहें हैं।

श्री. राजकुमार खर्ब, कृषिउद्यमी

जैविक गन्ने का शर्बत

जैविक गन्ने का गुड़

जैविक गन्ने का रस

श्री. खर्ब ने कृषि विभाग, हरयाणा से जैविक गुड़ निर्माण प्रक्रिया की तकनीक का लैसेंस प्राप्त कर लिया है और 50 कृषकों से मिलकर व्यापार मॉडल को अधिक क्रांतिकारी बनाने की कोशिश की है। जैसा की यह जैविक रूप से उगाये गए गन्नों से बना हुआ है, भंडारण से उपयोग तक की अधिक अवधि होने के साथ-साथ इसकी गुणवत्ता भी अधिक है। जैविक होने के कारण, गन्ने के रस से भी अधिक मूल्य प्राप्त हुआ मुनाफा भी बड़ा। सभी गन्ने के उत्पादकों के पास वैध पर्मिट के साथ स्वयं का गुड़ एकक है। श्री.खर्ब आगे कहते है कि, "स्वयं की फ़ैक्टरी स्थापित करने में निवेश करने के बजाय, इस तकनीक पर लैसेंस प्राप्त कर किसानों को बेचा जा सकता है ताकि किसानों द्वारा ही छोटे पैमाने पर कई कारखाने खोले जा सके।

एआरबी फ़र्म में फिलहाल पेरोल पर तीन कर्मचारी है और दो कुशल श्रमिक है। थोड़े ही समय की अवधि में, फ़र्म का वार्षिक कारोबार रु.35/- लाख के पार हो गया है। श्री.खर्ब व्यावसायिक मॉडल पर एक बायोगैस विनिर्माण संयंत्र भी चलते हैं और ग्रामीण युवाओं के विकास के लिए ऐसे कई ग्रामीण उद्यम विकसित करना चाहते हैं तथा पारंपरिक ग्रामीण उद्यम को फिर से जीवंत बनाकर उन्हें व्यावसायिक रूप से प्रतिस्पर्धा कराना चाहते हैं।

श्री. खर्ब का उभरते कृषिउद्यमियों के लिए संदेश है कि, "जैविक तरीके से उगाओ, जैविक ख़रीदों और ग्रह को भविष्य की पीढ़ी के लिए बचा के रखो"।

श्री. राजकुमार खर्ब

एच.सं. 309, 8-मरला कॉलोनी, पटेल नगर, हिसार-125001, हरयाणा

ईमेल आईडी: kharbmanoj@gmail.com, मोबाइल: +91 9467989055

श्री. पुरुषोत्तम हेंद्रे
नोडल अधिकारी

एनटीआई का नाम: कृषि विज्ञान केंद्र, (पायरेन्स)

पता: बाभलेश्वर, राहाता - 413 737, अहमदनगर, महाराष्ट्र, 02422-252414, 253612, 253008 (का), 02422-253536 (फ),

मोबाइल सं.: +91 9860668892

ईमेल: kvkahmedna-gar@yahoo.com

वेबसाइट: http://www.kvk.pravara.com/

प्रशिक्षण की सं.: 21
प्रशिक्षित अभ्यर्थियों की सं.: 614
स्थापित वेंचरों की सं.: 326
सफलता का दर: 53.09%
स्थापित एग्री-वेंचर के प्रकार : डेरीक्लीनिक, पशुचिकित्सालय, एग्री-इनपुट दुकान, रेशम पालन, नर्सरी एवं भूदृश्य निर्माण, केंचुआ खाद उत्पादन, अंगूर प्रक्रमण एकक, सूक्ष्म-सिंचाई प्रणाली, मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला, कस्टम हाइरिंग, दाल मिल, जैविक-कीटनाशक नियंत्रक, आदि।

केवीके-बाभलेश्वर द्वारा एग्री-व्यवसाय पर ई-परामर्श सेवाएँ

वर्ष 2004 से कृषि विज्ञान केंद्र, बाभलेश्वर, महाराष्ट्र एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस केंद्र (एसी एवं एबीसी) योजना के कार्यान्वयन हेतु मैनेज का सहयोगी है। अब तक कुल 21 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके है और 614 अभ्यर्थियों को प्रशिक्षित किया गया है। इस योजना के अंतर्गत, केवीके का मिशन है कृषिउद्यमियों को प्रोत्साहित करना जो इसके बदले ग्रामीण युवाओं को रोजगार प्रदान करेंगे और कृषि समुदाय के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए ज्ञान, निवेश और सेवाएँ प्रदान करने हेतु केवीके के लिए कार्य करेंगे। कृषि विज्ञान केंद्र, अहमदनगर 1992 में अपनी स्थापना के बाद से ही कृषि समुदाय को तकनीकी सहयोग प्रदान कर रहा है। यह प्रौद्योगिकी प्रसार के लिए नया विस्तार मॉडल प्रदान करने में अन्य केवीके और विस्तार एजेंसियों के लिए एक आदर्श मॉडल बन गया है। केवीके विभिन्न इनपुट आपूर्ति सेवाएँ जैसे बीज, अंकुर, कलम, जैविक-उर्वरक, जैविक-कीटनाशक, घुलनशील उर्वरक, पौध संरक्षण इनपुट, मिट्टी एवं पौध ऊतक विश्लेषणात्मक सेवाओं के साथ विभिन्न विस्तारण परामर्श सेवाएँ प्रदान कर रहा है। केवीके अहमदनगर का ज़ोर राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली के विभिन्न तकनीकी पैकेजों को अपनाने को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न निविष्टियों के विस्तार के साथ-साथ विस्तारण परामर्श सेवाएँ प्रदान करने पर है। हाल ही में, केवीके बाभलेश्वर ने "कृषि उद्योगजगत विकास" नामक विडियो सीडी निकली है जिसका अर्थ है "एग्रिकल्चरल एंटर्प्रिन्यरशिप डेव्लपमेंट"। इस सीडी में कृषि आधारित 15 उद्यमी विषय जैसे औषधीय पौधों की खेती, हाई-टेक कृषि तकनीके, जैविक-कीटनाशक, बकरी पालन, कुकुरमुता उत्पादन, नर्सरी प्रबंधन, खाद्य प्रक्रमण, सूचना प्रौद्योगिकी, मुर्गीपालन प्रबंधन, जैविक-उर्वरक, बटेर कृषि, रेशम-उत्पादन, स्पीरुलिना उत्पादन, केंचुआ खाद आदि सामाग्री मौजूद है। केवीके यह सीडी एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस के बैच के सभी प्रतिभागियों को और साथ ही केवीके बाभलेश्वर में अन्य कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम के कृषक प्रशिक्षकों को पाठ्यक्रम सामाग्री के रूप में प्रदान कर रहा है।

विडियो सीडी "कृषि उद्योगजगत विकास"

मीठे पानी के मोती का उत्पादन: उत्तरप्रदेश में एक लाभदायक वेंचर

मोती उत्पादन बेहतरीन रत्नों में से एक के जैविक उत्पादन से संबन्धित एक कला है; यह पर्ल ओयस्टर, एक बाईवाल्व मोल्लस्क से उत्पादित किया जाता है, जो समुद्र तल पर पाया जाता है और आम तौर पर समुद्री मत्स्यपालन में प्राप्त होता है। हालांकि, मीठे पानी की शंबूक मोती उत्पादन की तकनीक उत्तरप्रदेश के अंतर्देशीय मछली किसानों के लिए अब रहस्य नहीं है। श्री. बालमुकुंद गुप्ता (32), कृषि पौध विकृति में मास्टर, राजातालाब गाँव, वाराणसी जिला, उत्तरप्रदेश के निवासी मत्स्य कृषि के साथ मीठे पानी के मोती के उत्पादन में शामिल है। श्री. गुप्ता के पास 1.02 हेक्टर का मछली का तालाब है। वें मीठे पानी की मछलियों और भारत की मुख्य कार्प जैसे रोहू, मृगला, काट्ला, सामान्य कार्प, सिल्वर कार्प, मीठे पानी की झींगा और कैटफिश का प्रजनन और उत्पादन करते हैं। श्री. गुप्ता का कहना है कि, "मैंने इन क़िस्मों का विकल्प चुना क्योंकि यह उत्तर भारतीय जलवायु में भी उपयुक्त हैं"। श्री. गुप्ता किसानों में मत्स्यपालन की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए राज्य मत्स्यपालन विभाग, वाराणसी जिले के स्रोत व्यक्ति है। इस अवधि के दौरान, उन्हें मोती के उत्पादन के बारे में पता चला और इस विभाग से उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त हुआ और उन्होंने इसकी तकनीके सिखी। उन्होंने मोती उत्पादन की खेती 30 स्थानीय शंबूक (लमेल्ली डेन्स मार्जिनालिस) को जमा करके शुरू की। श्री. गुप्ता ने कहा, मोती का उत्पादन किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करेगा क्योंकि जब तक वें शंबूक का उत्पादन मछलियों के साथ कर रहें हैं इस उत्पादन में उनका कोई खर्च नहीं है। इस तकनीक को जिले में आरंभ करके, उन्होंने राज्य मत्स्यपालन विभाग, वाराणसी जिले के साथ मिलकर 20 मछली किसानों को मोती के उत्पादन में प्रशिक्षत किया। वाराणसी के मत्स्यपालन विभाग, के श्री. मुकेश कुमार सारंग ने कहा, "श्री. गुप्ता ने यह साबित किया है की इस जिले में मीठे पानी के शंबूक उत्पादन की विशाल क्षमता है और हम इसे स्थानीय मछली पालकों में बढ़ावा देने की योजना बना रहे हैं। मीठे पानी के मोती के उत्पादन पर अधिक जानकारी के लिए श्री. गुप्ता से मोबाइल सं. +91 8189004136, +91 9889887494, और ईमेल: balmukund7244@gmail.com पर संपर्क कर सकते हैं।

श्री. बालमुकुंद गुप्ता, कृषिउद्यमी

मोती का उत्पादन

मछली पकड़ना

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

कृषि उद्यमी उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंध संस्थान (मैनेज,)राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500 030, भारत
ई-मेल: indianagripreneur@manage.gov.in

"कृषि उद्यमी " श्रीमती वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
मुख्य संपादक : श्रीमती वी. उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज
संपादक : डॉ सरवनन राज निदेर्शक (कृषि विस्तार /(सी.ए.डी.)
सहायक संपादक : डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमती. ज्योति सहारे
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली

अधिक प्रश्नों हेतु, कृपया indianagripreneur@manage.gov.in पर संपर्क करें।